IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नामांकित शिक्षार्थियों की पृष्ठभूमि एवं पाठयक्रम लोकप्रियता – एक विश्लेषण

गिरधारी लाल जांगिड़[1] एवं अनिता प्रियदर्शिनी[2]

[1]शोधार्थी, स्ट्राईड, इग्नू, नई दिल्ली

[2]आचार्य, स्ट्राईड, इग्नू, नई दिल्ली

सारांश

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य इग्नू के क्षेत्रीय केंद्र, जयपुर में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के द्वारा विभिन्न स्तरों के पाठयक्रमों में प्रवेश लेने वाले शिक्षार्थियों की पृष्ठभूमि एवं लोकप्रियता को ज्ञात करना है। अध्ययनकर्ता ने शोध हेतु डेटा माइनिंग की समूह विश्लेषण पद्धति का उपयोग करके मात्रात्मक अनुसंधान का प्रयोग अध्ययन के लिए किया गया है। साथ ही, पाठयक्रमों में नामांकित शिक्षार्थियों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का वर्णनात्मक विश्लेषण प्रतिशत एवं आरेख चित्रों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ है कि, पांच वर्षों (2018–2022) में सबसे लोकप्रिय कार्यक्रम प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई), पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रमाण पत्र (सीएलआईएस), कला में स्नातक उपाधि (बीएजी) और खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन) रहे हैं। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की विशेषताओं जैसे कि प्रवेश में लचीलापन, शिक्षार्थी केंद्रित पाठयक्रम प्रणाली, जिससे शिक्षार्थी अपनी सीखने की गति, सुविधा एवं सामर्थ्य आदि के अनुसार अध्ययन को जारी रख सकते है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की इस विधा ने शिक्षार्थियों को प्रवेश हेतु आकर्षित किया है।

शब्दावली: मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, शिक्षार्थियों की पृष्ठभूमि, नामांकन, पाठयक्रम लोकप्रियता।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की वृद्धि और विकास के लिए उच्च शिक्षा को आवश्यक माना गया है, क्योंकि इसके द्वारा मानव संसाधनों का उत्पादन होता है। शिक्षार्थियों को उनके ज्ञान एवं कौशल को अधिग्रहण करने तथा उनकी क्षमताओं को विकास करने में उच्च शिक्षा लाभप्रद होती है। उच्च शिक्षा विशेषज्ञता प्रदान करने के साथ–साथ व्यक्तिगत विकास भी सुनिश्चित करती है। यह बौद्धिक विकास के साथ साथ सांस्कृतिक चेतना भी पैदा करती है। उच्च शिक्षा लोगों को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने, निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाने, अनुशासन की अधिक समझ प्राप्त करने एवं बेहतर स्वास्थ्य प्राप्त करने में सहयोगी होती है। इस प्रकार शिक्षार्थियों को जीवन एवं समाज में आने वाली चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक करने में उच्च शिक्षा का योगदान महत्वपूर्ण है।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में राष्ट्र विकास के लिये शिक्षा पर अत्यंत बल दिया गया है और साथ ही व्यक्ति के उत्थान एवं सामाजिक विकास के लिये गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा हेतु बडे पैमाने पर सुधार लागू किये गये हैं। ताकि एक लोकतांत्रिक, न्यायपूर्ण, सामाजिक रूप से जागरूक, सुसंस्कृत राष्ट्र का निर्माण हो सके जो सभी व्यक्तियों के लिए स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व और न्याय को सुनिश्चित कर सके (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)। उच्च शिक्षा स्थायी आजीविका और राष्ट्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। जैसे–जैसे भारत एक ज्ञान रूपी अर्थव्यवस्था और समाज

बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, अधिक से अधिक युवा भारतीयों के उच्च शिक्षा प्राप्ति की आकांक्षा की संभावना है, अतः उच्च शिक्षा के उद्देश्य और संदर्भ जैसे विषयों पर विचार विमर्श बहुत ही जरूरी है, जिससे की भारत जैसे विकासशील देश में अधिक से अधिक शिक्षार्थियों को उच्च शिक्षा के दायरे में शामिल किया जा सके।

शिक्षा व्यक्ति की क्षमताओं को बढ़ाने और किसी भी देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने का सबसे प्रभावशाली साधन है। इस विषय पर अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण की रिपोर्ट (2020–2021) उल्लेखनीय प्रकाश डालती है। इस रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2020–21 में उच्च शिक्षा में कुल नामांकन 4.13 करोड़ रहा है जिसमें महिला शिक्षार्थियों का नामांकन 48.07 प्रतिशत रहा, जो कि पुरूष शिक्षार्थियों के नामांकन 51.03 प्रतिशत की तुलना में 2.96 प्रतिशत कम रहा है (अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण रिपोर्टः 2020–2021, पृ. 16)। जो कि यह दर्शाता कि उच्च शिक्षा में महिला शिक्षार्थियों की भागीदरी पुरूष शिक्षार्थियों की तुलना में अभी भी कम है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा को शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करने तथा पारम्परिक शिक्षा प्रणाली के एक विकल्प की तरह पेश किया गया है, जिससे कि शिक्षा से वंचित एक बड़े वर्ग को लाभ पहूँचाया जा सके। भारत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली आधी शताब्दी से भी अधिक पुरानी हो चुकी है। देश में पहला पत्राचार पाठ्यक्रम 1962 में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा अपने पत्राचार पाठ्यक्रम और सतत शिक्षा स्कूल की स्थापना के साथ हूई थी। भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की शुरूआत डॉ. बी. आर. अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय (तब आन्ध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय) की स्थापना 1982 में हूई। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) 1985 में स्थापित किया गया और इसे मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के द्वारा उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले अग्रणी विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता प्राप्त है (प्रियदर्शिनी, 2018)। एकामालाफे (2006) ने अध्ययन में पाया कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा शिक्षार्थियों को जीवपर्यन्त सीखने के अवसर प्रदान करती है और यह उन्हें एक शिक्षित, सभ्य नागरिक एवं सामाजिक प्रेरक बनने में सहयोग देती है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विकल्प होने के बावजूद भी ग्रामीण तथा दूर दराज के क्षेत्रों में अज्ञानता तथा सांस्कृतिक बाधाओं एवं गरीबी के कारण वह शिक्षा का लाभ लेने से वंचित है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा ने उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कुमार एवं अन्य (2008) ने अपने अध्ययन में पाया कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा मुख्य रूप से गृहणियों, कामकाजी व्यक्तियों, वयस्कों, उम्रदराज लोगों को उच्च शैक्षिक आवश्यकतों को पूर्ण करने का एक माध्यम है ताकि उनके ज्ञान को उन्नत किया जा सकें। सही रूप से मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा सभी श्रेणियों की महिलाओं की शैक्षिक योग्यता बढ़ाने, सीखने के अवसर प्रदान करने के साथ साथ देश के विकास में योगदान देने के लिए अवसर प्रदान करती है। इसने महिलाओं को उनकी क्षमता को संगठित करने, जन्मजात क्षमताओं को विकसित करने, संसाधनों पर नियत्रंण और उनकी स्थिति और जीवन स्तर को उपर उठाने में मदद की हैं। प्रियदर्शिनी (2018) के अनुसार मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में लचीलेपन एवं ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के व्यापक उपयोग के कारण आजीवन सीखने के इच्छुक लोगों के लिए एक पसंदीदा विकल्प बन गई है।

मैपोलिसा एवं अन्य (2012) ने अपने अध्ययन में पाया कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा महिलाओ की उच्च शिक्षा के एक वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में जिम्बाब्वे मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा भी उपलब्ध कराई जा रही है। उन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि महिलाओं के लिए विश्वविद्यालय शिक्षा का न होना मानव पूंजी के उत्पादन में बाधा और राष्ट्रीय विकास के लिए एक कमी हो सकती है। बोजकर्ट एवं अन्य (2019) ने अनादोलु ओपन यूनिवर्सिटी फैकल्टी प्रोग्राम की महिला शिक्षार्थियों के अनुभवों पर अध्ययन किया। उन्होंने यह अध्ययन ऑनलाइन सर्वेक्षण के माध्यम से किया जिसमें उन्होंने महिला शिक्षार्थियों को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में उनकी भागीदारी दौरान अपने अनुभवों को साझा करने के लिए कहा।

उन्होंने अध्ययन में महिला शिक्षार्थियों के अनुभवों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा सही रूप से सामाजिक न्याय के लिए एजेंट का काम कर सकती है, क्योंकि इसमें शिक्षा की बाधाओं को तोड़ने और इसके परिणामस्वरूप समाज का लोकतंत्रीकरण करने की शक्ति है।

अतः संक्षिप्त साहित्य समीक्षा यह दर्शाती है, कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी साबित हो रही है। इसके द्वारा बड़ी संख्या में वंचित शिक्षार्थियों को डिग्री/उच्च शिक्षा मिल रही है। यह शिक्षा प्रदान करने का एक ऐसा साधन बन गया है जो दूरदराज के क्षेत्रों में निवास करने वाले तथा जिनके लिए पारम्परिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करना सम्भव नहीं है। इस क्षेत्र में कम अध्ययन पाए गए हैं। हालाँकि, यह देखने की आवश्यकता है कि ग्रामीण और सुदूरवर्ती क्षेत्रों में दूरस्थ शिक्षा प्राप्त व्यक्ति और विभिन्न सामाजिक वर्ग से संबंधित लोग दूरस्थ शिक्षा का उपयोग कैसे कर रहे हैं?

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्ता

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य है। राजस्थान की सीमा देश के अन्य पाँच राज्यों से भी लगती है जिनमें गुजरात, मध्यप्रदेश, पंजाब, उत्तरप्रदेश एवं हरियाणा है। राज्य का क्षेत्रफल 3.42 लाख वर्ग कि.मी. है। 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की साक्षरता दर 66.11 प्रतिशत है जो कि राष्ट्रीय स्तर की औसत साक्षरता दर 72.98 प्रतिशत की तुलना में कम है। राजस्थान में पुरूष साक्षरता दर 79.19 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर 52.12 प्रतिशत है। (स्त्रोतः जनगणना रिपोर्ट–2011)

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा एक समतामूलक समाज सुनिश्चित करने में सहायक होती है। जो सही और व्यवस्थित रूप से उच्च शिक्षा की जरूरतों एवं मांग को पूरा करने में सहयोग प्रदान कर सकती है। यह शिक्षार्थियों को रोजगारपरक, आत्मविश्वासी, आत्म जागरूक एवं आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होती है। शिक्षार्थी रोजगार करते हुए भी शिक्षा ले सकते हैं। गृहणियां जो पारम्परिक शिक्षा प्रणाली से शिक्षा नहीं ले सकतीं वह भी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अपनी शिक्षा का स्तर बढ़ा सकती हैं। इस प्रकार मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा लोगों की शिक्षा किस प्रकार भागीदारी निभा रही है? इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, जयपुर के संदर्भ में **मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नामांकित शिक्षार्थियों की पृष्ठभूमि एवं पाठयक्रम लोकप्रियता– एक विश्लेषण** महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य

- इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, जयपुर के विभिन्न स्तरों के पाठयक्रमों में प्रवेश लेने वालें शिक्षार्थियों की लोकप्रियता का अध्ययन करना।
- इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, जयपुर के शिक्षार्थियों के सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

अनुसंधान क्रियाविधि

इस अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का उपयोग किया गया। डेटा माइनिंग की क्लस्टर विश्लेषण पद्धति का उपयोग करके मात्रात्मक अनुसंधान का शोध प्रयोग किया गया।

यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। अध्ययन हेतु वर्ष 2018 से वर्ष 2022 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के पाठयक्रमों में क्षेत्रीय क्रेन्द्र, जयपुर में नामांकित शिक्षार्थियों को लिया गया।

अध्ययन की सीमाऐं

इस अध्ययन में केवल इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, जयपुर में नामांकित शिक्षार्थियों पर आधारित है। अध्ययन हेतु वर्ष 2018 से 2022 तक के नामांकित शिक्षार्थियों को ही लिया गया है।

परिणाम

वर्ष 2018 से 2022 का पाठयक्रम का स्तरवार नामांकन

इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, जयपुर के अन्तर्गत वर्ष 2018 से वर्ष 2022 में नामांकित शिक्षार्थियों का स्तरवार नामांकन से पता चलता है कि सर्वाधिक नामांकन स्नातक में 24875 है, जो कि सबसे अधिक है। इसके अलावा पिछले 5 वर्षों के आंकड़ों से पता चलता है कि प्रमाण–पत्र पाठयक्रम में नामांकन 21431 है। हांलाकि शिक्षार्थियों का नामांकन डिप्लोमा पाठयक्रम में 12136, स्नात्तकोत्तर में 9680 एवं स्नात्कोत्तर डिप्लोमा में 6214 रहा है। नामांकन का विवरण तालिका–1 में दर्शाया गया है

तालिका–1: वर्ष 2018 से 2022 का स्तरवार नामांकन

पाठयक्रम स्तर	वर्षवार नामांकनों की संख्या					कुल
	2018	2019	2020	2021	2022	
स्नात्तकोत्तर	1531	1741	2114	2097	2197	9680
स्नातक	6912	5055	5999	4026	2883	24875
स्नात्तकोत्तर डिप्लोमा	1086	1170	2221	908	829	6214
डिप्लोमा	1200	1627	3858	2596	2855	12136
प्रमाण–पत्र	2483	7257	7481	1932	2278	21431
कुल	**13212**	**16850**	**21673**	**11559**	**11042**	**74336**

(स्त्रोतः क्षेत्रीय केन्द्र, जयपुर से प्राप्त डाटा के अनुसार)

आरेख–1

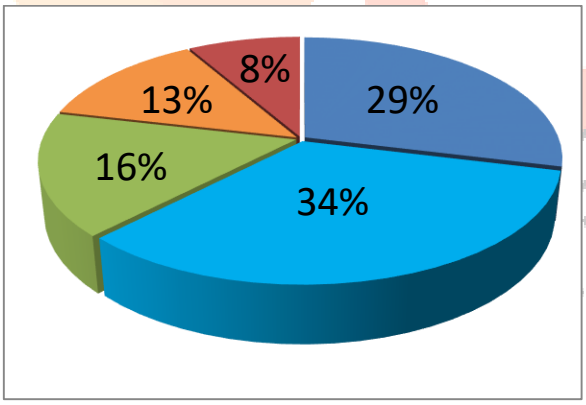

प्रमाण पत्र-29%, स्नातक -34%, डिप्लोमा - 16%, स्नात्तकोत्तर - 13%, स्नात्तकोत्तर डिप्लोमा - 8%

आरेख–1: वर्ष 2018 से वर्ष 2022 में उपरोक्त कुल नामांकित शिक्षार्थियों की स्तरवार भागीदारी

आरेख–अ के आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले 05 वर्षों में नामांकान का सबसे अधिक हिस्सा 34 प्रतिशत स्नातक स्तर का है, उसके बाद प्रमाण–पत्र स्तर का 29 प्रतिशत है। यद्यपि डिप्लोमा स्तर, स्नात्तकोत्तर स्तर एवं स्नात्तकोत्तर डिप्लोमा स्तर के पाठयक्रमों में भी नामांकन हिस्सा ठीक रहा है

वर्ष 2018 से वर्ष 2022 में उच्च नामांकन वाले पाठयक्रम

पांच वर्षों में नामांकित पाठयक्रमों के आंकड़ों से पता चलता है कि सभी स्तरों के पाठयक्रमों में से चार उच्च नामांकन वाले पाठयक्रम– प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (डीईसीई), पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में सर्टिफिकेट (सीएलआईएस), कला में स्नातक उपाधि (बीएजी) एवं खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन) है, जिनमें शिक्षार्थियों ने प्रवेश हेतु अधिक रूचि दिखाई है।

तालिका–2: वर्ष 2018 से वर्ष 2022 के दौरान उच्च नामांकन वाले पाठयक्रम

उच्च नामांकन वाले पाठयक्रम	वर्षवार नामांकनो की संख्या				
	2018	2019	2020	2021	2022
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रमाण पत्र**(सीएलआईएस)**	375	4344	4370	233	616
कला में स्नातक उपाधि **(बीएजी)**	0	2014	3077	2142	1269
प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा **(डीईसीई)**	62	610	2892	2039	2502
खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र **(सीएफएन)**	300	974	1151	711	616

उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की लिंगानुसार स्थिति

तालिका–2, के आकड़ों के विश्लेषण के अनुसार उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में लिंगानुसार भागीदारी को तालिका– 3 में विस्तारपूर्वक दर्शाया गया है। उपरोक्त तालिका–3 में यह पाया गया है कि वर्ष 2018 से 2022 तक कला में स्नातक उपाधि (बीएजी) पाठयक्रम में पुरूष शिक्षार्थियों का औसतन नामांकन (78.53%), जो महिलाओं के औसतन नामांकन (21.47%) की तुलना में अधिक है। परन्तु दूसरी तरफ देखा जाये तो महिला शिक्षार्थियों ने प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई) पाठयक्रम में महिला शिक्षार्थियों का औसतन नामांकन (78.14%) है जो कि पुरूष शिक्षार्थियों के औसतन नामांकन (21.86%) की तुलना में ज्यादा है। इसी प्रकार पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में सर्टिफिकेट (सीएलआईएस) पाठयक्रम में पुरूष शिक्षार्थियों का औसतन नामांकन (69.12%) जो महिलाओं के औसतन नामांकन (30.88%) की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार से खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन) पाठयक्रम में महिला शिक्षार्थियों का औसतन नामांकन (27.32%) है जो कि पुरूष शिक्षार्थियों के औसतन नामांकन (72.68%) की तुलना में कम है। इसकी वजह यह है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई) पाठयक्रम सीधे–सीधे महिलाओं के कार्यक्षेत्र एवं उनके लिए उपयोगी पाठयक्रम है।

तालिका–3: उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की लिंगानुसार स्थिति (आंकड़े प्रतिशत में)

पाठयक्रम	लिंगानुसार वर्षवार नामांकनों की संख्या											
	2018		2019		2020		2021		2022		औसतन (%) 2018–2022	
	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला
कला में स्नातक उपाधि **(बीएजी)**	–	–	78.15	21.85	81.67	18.33	77.08	22.92	77.23	22.77	78.53	21.47
प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा **(डीईसीई)**	22.58	77.42	2.62	97.38	36.89	63.11	23.93	76.07	23.30	76.70	21.86	78.14
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में सर्टिफिकेट **(सीएलआईएस)**	73.60	26.40	72.33	27.67	69.08	30.92	65.67	34.33	64.94	35.06	69.12	30.88
खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र **(सीएफएन)**	31.00	69.00	69.51	30.49	80.54	19.46	90.86	9.14	91.47	8.53	72.68	27.32

उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की क्षेत्रवार स्थिति

तालिका–2, के आकड़ों के विश्लेषण के अनुसार उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की क्षेत्रवार भागीदारी को तालिका– 4 में विस्तारपूर्वक दर्शाया गया है। तालिका–4, के आकड़ों के विश्लेषण में यह पाया गया है कि वर्ष 2018 से 2022 तक कला में स्नातक उपाधि (बीएजी) पाठयक्रम में पुरूष शिक्षार्थियों (शहरी, ग्रामीण एवं जन–जातीय) का औसतन नामांकन (79.54%), जो महिलाओं के औसतन नामांकन (20.46%) की तुलना में अधिक है। परन्तु दूसरी तरफ देखा

जाये तो प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई) पाठयक्रम में महिला शिक्षार्थियों (शहरी, ग्रामीण एवं जन–जातीय) का औसतन नामांकन (83.89%) है जो कि पुरूष शिक्षार्थियों (शहरी, ग्रामीण एवं जन–जातीय) के औसतन नामांकन (16.11%) की तुलना में ज्यादा है। इसी प्रकार पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में सर्टिफिकेट (सीएलआईएस) पाठयक्रम में पुरूष शिक्षार्थियों (शहरी, ग्रामीण एवं जन–जातीय) का औसतन नामांकन (65.68%), जो महिलाओं के औसतन नामांकन (34.32%) की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार से खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन) पाठयक्रम में महिला शिक्षार्थियों (शहरी, ग्रामीण एवं जन–जातीय) का औसतन नामांकन (20.38%) है जो कि पुरूष शिक्षार्थियों (शहरी, ग्रामीण एवं जन–जातीय) के औसतन नामांकन (79.62%) की तुलना में कम है। अतः पाठयक्रमों को जन–जातीय क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए कदम उठाने की आवश्यकता है।

तालिका–4: उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की क्षेत्रवार स्थिति (आंकड़े प्रतिशत में)

पाठयक्रम (2018–2022)	शहरी (प्रतिशत मे)		ग्रामीण (प्रतिशत मे)		जन–जातीय (प्रतिशत मे)		औसतन (%) (शहरी, ग्रामीण एवं जन–जातीय)	
	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला
कला में स्नातक उपाधि (बीएजी)	73.96	26.04	81.33	18.67	83.33	16.67	79.54	20.46
प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई)	18.85	81.15	29.50	70.50	0.00	100.00	16.11	83.89
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रमाण पत्र (सीएलआईएस)	67.92	32.08	71.61	28.39	57.50	42.50	65.68	34.32
खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन)	82.11	17.89	73.80	26.20	82.93	17.07	79.62	20.38

उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की आयु-समूहवार प्रवृत्ति

तालिका–2, के आकड़ों के विश्लेषण के अनुसार उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की आयु समूहवार की भागीदारी को तालिका–5 में विस्तारपूर्वक दर्शाया गया है।

तालिका–5 यह दर्शाती है कि 18 से 27 वर्ष एवं 28 से 37 तक के आयु वर्ग के शिक्षार्थियों का औसतन प्रतिशत की बात करे तो कला स्नातक में महिलाओं का औसतन नामांकन (50.01%) जो कि पुरूष शिक्षार्थियों के औसतन नामांकन (49.99%) है। अन्य पाठयक्रमों के आकड़ों से पता चलता है कि महिला शिक्षार्थियों की औसतन आयु पुरूष शिक्षार्थियों की अपेक्षा अधिक है। इससे पता चलता है कि ने अपनी शिक्षा के लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण के पाठयक्रमों को प्राथमिकता दी है। इसका तात्पर्य यह है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण की विशेषताऐं जैसे– उम्र की कोई सीमा ना होना, सीखने में लचीलापन आदि उन्हें अपनी शिक्षा जारी रखने में मदद कर रहे हैं। 38 से 47 तक की आयु वर्ग के शिक्षार्थियों ने भी पाठयक्रमों में प्रवेश लिया है लेकिन यह बहुत ही कम है। 47 से उपर आयु वर्ग में कोई भी शिक्षार्थी नग्णय के बराबर है। अतः उर्पयुक्त आकड़े यह दर्शाते है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवा वर्ग 18 से 27 वर्ष के शिक्षार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा सहयोगी साबित हो रही है।

तालिका–5: उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की आयु समूहवार प्रवृत्ति (आंकड़े प्रतिशत में)

पाठयक्रम	आयु 18 से 27 वर्ष		आयु 28 से 37 वर्ष		आयु 38 से 47 वर्ष		आयु 47 वर्ष से अधिक		औसतन (%) (आयु वर्ग में)	
	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला
कला में स्नातक उपाधि (बीएजी)	71.68	73.70	27.59	25.69	0.67	0.62	0.06	0.00	49.99	50.01
प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा	50.07	51.37	49.61	47.91	0.32	0.72	0.00	0.00	49.34	50.64

(डीईसीई)										
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रमाण पत्र (सीएलआईएस)	57.73	68.28	42.16	31.61	0.09	0.10	0.03	0.00	49.94	50.06
खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन)	34.86	61.23	60.44	34.78	4.30	3.76	0.40	0.23	47.65	53.35

उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की वर्ग–वार स्थिति

तालिका–2, के आकड़ों के विश्लेषण के अनुसार उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की वर्ग–वार की भागीदारी को तालिका– 6 में विस्तारपूर्वक दर्शाया गया है। आकड़ों के विश्लेषण में यह पाया गया है कि कला में स्नातक उपाधि (बीएजी) पाठयक्रम में सभी वर्गों के पुरूष शिक्षार्थियों का औसतन नामांकन (81.30%), जो सभी वर्गों की महिला शिक्षार्थियों के औसतन नामांकन (18.70%) की तुलना में अधिक है। परन्तु दूसरी तरफ देखा जाये तो प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई) पाठयक्रम में सभी वर्गों की महिला शिक्षार्थियों का औसतन नामांकन (72.69%) है जो कि पुरूष शिक्षार्थियों के औसतन नामांकन (27.31%) की तुलना में ज्यादा है। इसी प्रकार पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में सर्टिफिकेट (सीएलआईएस) पाठयक्रम में सभी वर्गों के पुरूष शिक्षार्थियों का औसतन नामांकन (70.09%), जो सभी वर्गों की महिला शिक्षार्थियों के औसतन नामांकन (29.91%) की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार से खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन) पाठयक्रम में सभी वर्गों की महिला शिक्षार्थियों का औसतन नामांकन (25.51%) है जो कि सभी वर्गों के पुरूष शिक्षार्थियों के औसतन नामांकन (74.49%) की तुलना में कम है।

तालिका–6: उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की वर्गवार स्थिति (आंकड़े प्रतिशत में)

पाठयक्रम	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन–जाति		अन्य पिछड़ा वर्ग (क्रिमीलेयर)		अन्य पिछड़ा वर्ग (नॉन–क्रिमीलेयर)		आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग		औसतन प्रतिशत (वर्ग वार)	
	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला
कला में स्नातक उपाधि (बीएजी)	79.87	20.13	74.23	25.77	74.98	25.02	91.74	8.26	86.37	13.63	80.60	19.40	81.30	18.70
प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई)	20.01	79.99	27.56	72.44	21.00	79.00	16.33	83.67	35.50	64.50	43.43	56.57	27.31	72.69
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रमाण पत्र (सीएलआईएस)	72.02	27.98	69.27	30.73	70.43	29.57	60.26	39.74	72.18	27.82	76.42	23.58	70.09	29.91
खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन)	81.36	18.64	65.81	34.19	65.37	34.63	91.13	8.87	93.28	6.72	50.00	50.00	74.49	25.51

उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की वैवाहिक स्थिति

तालिका–2, के आकड़ों के विश्लेषण के अनुसार उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की आयु समूहवार की भागीदारी को तालिका–7 में विस्तारपूर्वक दर्शाया गया है। **तालिका–7,** के आकड़ों से पता चलता कि कला स्नातक में पुरूष शिक्षार्थियों का औसतन (वैवाहिक स्तर) नामांकन (79.19%) जो कि प्रवेश लेने वाली महिलाओं के औसतन (वैवाहिक स्तर) नामांकन (23.81%), की तुलना में अधिक है। सभी पाठयक्रमों में विवाहित महिला शिक्षार्थियों की तुलना में अधिक है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई) में पुरूष शिक्षार्थियों का औसतन (वैवाहिक स्तर) नामांकन (25.86%) जो कि प्रवेश लेने वाली महिलाओं के औसतन (वैवाहिक स्तर) नामांकन (74.14%), की तुलना

में कम है। इसी प्रकार पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रमाण पत्र (सीएलआईएस) में पुरूष शिक्षार्थियों का औसतन (वैवाहिक स्तर) नामांकन (70.51%) जो कि प्रवेश लेने वाली महिलाओं के औसतन (वैवाहिक स्तर) नामांकन (29. 49%), की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन) में पुरूष शिक्षार्थियों का औसतन (वैवाहिक स्तर) नामांकन (76.82%) जो कि प्रवेश लेने वाली महिलाओं के औसतन (वैवाहिक स्तर) नामांकन (23.18%), की तुलना में अधिक है। अतः यह ज्ञात होता है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पाठयक्रमों में अविवाहित एवं विवाहित पुरूषों एवं महिला शिक्षार्थियों ने पाठयक्रमों को पसंद कर अपनी उच्च शिक्षा की जरूरतों को पूरा कर किया है।

तालिका–7: उच्च नामांकन वाले पाठयक्रमों में शिक्षार्थियों की वैवाहिक स्थिति (आंकड़े प्रतिशत में)

पाठयक्रम	**विवाहित (प्रतिशत में)**		**अविवाहित (प्रतिशत में)**		**औसतन प्रतिशत (वैवाहिक स्तर में)**	
	पुरूष	**महिला**	**पुरूष**	**महिला**	**पुरूष**	**महिला**
कला में स्नातक उपाधि **(बीएजी)**	81.45	18.55	70.93	29.07	76.19	23.81
प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा **(डीईसीई)**	36.54	63.46	15.18	84.82	25.86	74.14
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रमाण पत्र **(सीएलआईएस)**	72.90	27.10	68.12	31.88	70.51	29.49
खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र **(सीएफएन)**	85.98	14.02	67.67	32.33	76.82	23.18

निष्कर्ष

उच्च शिक्षा प्रदान करने में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। शिक्षार्थियों ने पिछले पांच वर्षों (2018–2022) में कार्यक्रम प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई), पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रमाण पत्र (सीएलआईएस), कला में स्नातक उपाधि (बीएजी) एवं खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन) पाठयक्रमों में को पंसद किया है। अध्ययन के निष्कर्षानुसार कला में स्नातक उपाधि (बीएजी), प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई) एवं पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रमाण पत्र (सीएलआईएस) पाठयक्रमों में शहरी शिक्षार्थियों का नामांकन ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाली शिक्षार्थियों की तुलना में ज्यादा है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षार्थियों का एक बड़ा हिस्सा जो कि ग्रामीण क्षेत्रों से आता है, अभी भी दूरस्थ शिक्षा की पहूॅच से दूर है। जन–जातीय क्षेत्रों से प्रवेश लेने वाले शिक्षार्थियों का प्रतिशत बहुत ही कम है। अतः पाठयक्रमों को जन–जातीय क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए कदम उठाने की आवश्यकता है। साथ ही हम अगर पुरूषों के नामांकन के आंकड़ों पर नजर डालते है तो देखते है कि कला में स्नातक उपाधि (बीएजी), प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में डिप्लोमा (डीईसीई) एवं पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रमाण पत्र (सीएलआईएस) में ग्रामीण शिक्षार्थियों का नामांकन शहरी शिक्षार्थियों की तुलना में अधिक है। लेकिन दूसरी तरफ खाद्य एवं पोषण में प्रमाण पत्र (सीएफएन) पाठयक्रम में शहरी शिक्षार्थियों का नामांकन ग्रामीण शिक्षार्थियों की तुलना में अधिक है।

प्रवेश लेने वाली महिलाओं में अविवाहित महिला शिक्षार्थियों का प्रतिशत, सभी पाठयक्रमों में विवाहित महिला शिक्षार्थियों की तुलना में अधिक है। पुरूषों के अन्तर्गत सभी चारों पाठयक्रमों में विवाहित पुरूषों का प्रतिशत अविवाहित पुरूषों की तुलना में अधिक है। अतः यह ज्ञात होता है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण पाठयक्रमों में अविवाहित एवं विवाहित दोनों महिला शिक्षार्थियों ने पाठयक्रमों को पसंद कर अपनी उच्च शिक्षा की जरूरतों को पूरा कर रही है।

यह शोध कार्य अनुशंसा करता है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को और अधिक रोजगारोन्मुखी पाठयक्रमों का संचालन करना चाहिए जिससे शिक्षा और रोजगार प्राप्त कर अधिक से अधिक शिक्षार्थी लाभान्वित हो सके। मुक्त एवं

दूरस्थ शिक्षण प्रणाली की विशेषताएं जैसे कि प्रवेश में लचीलापन, शिक्षार्थी केंद्रित पाठयक्रम प्रणाली जिसमें शिक्षार्थी अपनी गति और सुविधा तथा सामर्थ्य आदि के अनुसार अध्ययन को जारी रख सकते है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण की इस विधा ने शिक्षार्थियों को प्रवेश हेतु आकर्षित किया है।

सुझाव

विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित सुझाव और सिफारिश दी जाती है:

- शिक्षार्थियों के नामांकन को बढ़ाने के लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं को अपने पाठयक्रमों की प्रचार प्रसार की गतिविधियों को ग्रामीण स्तर एवं जनजातिय क्षेत्रों के साथ–साथ शहरी इलाकों में भी करना चाहिए ताकि अधिक अधिक संख्या में शिक्षार्थी इनका लाभ उठा सकें।
- शिक्षार्थियों के लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं/विश्वविद्यालयों द्वारा अधिक से अधिक रोजगारोन्मुखी पाठयक्रम तैयार किये जाने चाहिए ताकि उन्हें रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त हो सके।
- शिक्षार्थियों को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की पद्धतियों एवं विधाओं से अवगत होना होगा ताकि वे दूसरों को इस के बारे में जागरूक कर सके।
- शिक्षा का आकलन करने के लिए और अधिक शोध अध्ययन को बढ़ाना चाहिए ताकि उनकी शिक्षा एवं विकास के लिए आवश्यक उपाय सुझाये जा सके।

संदर्भ ग्रंथः

Akomolafe, C. O. (2006). Open and distance learning as a mechanism for women empowerment in nigeria. *Educational Foundations and Management*. Retrieved-02-29-2024 from http://pcf4.dec.uwi.edu/viewpaper.php?id=79

Bozkurt, A., Koseoglu, S., & Keefer, J. (2019). My story: A Found Poem Reflecting the Voice of Women Studying in Open Education Programs in Turkey. *OER19: Recentering Open: Critical and global perspectives*, *10*(11).

Kumar, S. et all. (2008). Extending Open Distance Learning into Rural North-Eastern India. *Asian Journal of Distance Education*, 6(2). Retrieved-02-29-2024 from https://www.learntechlib.org/p/185166/

Mapolisa, T., & Chirimuuta, C. (2012). Open and Distance Learning: An Alternative University Education for Women at The Zimbabwe Open University. *International Women Online Journal of Distance Education*, *1*(1), 1-14.

Ministry of Education. (2021). All India Survey on Higher Education (2020-21). Available on: https://aishe.gov.in/aishe/gotoAisheReports

Ministry of Education. National Education Policy (2020). Available on: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

Priyadarshini, A. (2018). Making Learning More Accessible for Women: The Practitioners' Viewpoint, *Indian Journal of Adult Education*, Vol-79 (3) (2018) Page-30-40.

Srivastava, M. & Reddy, V. V. (1996). *Distance Education in India: A Model for Developing Countries.* Associated Business Corporation, Dhaka, Bangladesh.